Contribution of Nankiram Kanwar in the Social Upliftment of Tribes

(ननकीराम कँवर का जनजातियों के सामाजिक उत्थान में योगदान)

Mrs. Preeti Dwivedi*; Prof. Manish Kumar Pandey**

**Research Scholar; **Research Supervisor & Professor, Department of Political Science,*
Shri Rawatpura Sarkar University, Raipur (C.G.), India,
Email: * pritidwivedi14@gmail.com ; ** manishpandey4737@gmail.com

DOI: 10.52984/ijomrc5202

सारांश (Abstract):

छत्तीसगढ़ की राजनीति में ननकी राम कंवर का नाम एक सम्मानित और कर्तव्यनिष्ठ राजनेता के रूप में लिया जाता है, जिन्होंने जनसंघ से अपना राजनैतिक यात्रा आरंभ करते हुए लंबे समय से समाज और राष्ट्र सेवा में समर्पित हैं। उन्होंने विधानसभा सदस्यता और मंत्री पदों पर कई बार कार्य किया, खासकर जनजातीय उत्थान और नक्सल उन्मूलन सम्बन्धी नीतियों में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही। प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य कोरबा जिले में निवास करने वाले अनुसूचित जनजातियों की ननकीराम कंवर द्वारा उनके सामाजिक उत्थान में दिए गए योगदान के प्रति धारणा को समझना है, जिसके अंतर्गत अनुसूची एवं प्रश्नावली के माध्यम से अनुसूचित जनजातीय समुदाय के लोगों से उनके सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक पहलुओं जैसे सामान्य एवं तकनीकी विकास, शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, जीवनशैली का स्तर, गरिमा आदि से संबंधित प्रश्न पूछे गए। इस अध्ययन में वर्णनात्मक (Descriptive) एवं सर्वेक्षण (Survey Research) दोनों प्रकार की शोध डिज़ाइन को अपनाया गया है। नमूना चयन हेतु सुविधाजनक नमूना विधि (Convenient Sampling Method) का उपयोग किया गया। कुल 416 प्रतिभागियों ने 14 प्रश्नों वाले पाँच-बिंदु लिकर्ट स्केल प्रश्नावली पर उत्तर दिए। मान्यता (Validity) का परीक्षण फैक्टर विश्लेषण (Factor Analysis) द्वारा तथा विश्वसनीयता (Reliability) का परीक्षण क्रोनबाख अल्फा (Cronbach's Alpha) मान द्वारा किया गया। धारणाओं को मीन वैल्यू और औसत मीन वैल्यू के माध्यम से मापा गया तथा परिकल्पनाओं की जांच एएनओवा (ANOVA) द्वारा की गई। निष्कर्षों से पता चलता है कि कोरबा जिले में अनुसूचित जनजाति समुदाय के सामाजिक उत्थान में ननकीराम कंवर का योगदान सकारात्मक और महत्वपूर्ण रहा है।

मुख्य शब्द: **ननकिराम कंवर, जनजाति, कोरबा, सामाजिक उत्थान, आदिवासी समस्या।**

1. परिचय

भारत के आदिवासी समुदायों की सामाजिक स्थिति में सुधार के लिए विभिन्न नेताओं ने समय-समय पर महत्वपूर्ण योगदान दिया है। छत्तीसगढ़ राज्य के कोरबा जिले में निवासरत अनुसूचित जनजातियों

(Scheduled Tribes) के जीवन में श्री ननकिराम कँवर जी की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय रही है। यह अध्ययन इन समुदायों के लोगों की धारणाओं के माध्यम से यह जानने का प्रयास करता है कि क्या एक राजनैतिक नेता के रूप में ननकीराम कँवर जी की नीतियाँ और परियोजनाएँ वास्तव में उन अतिपिछडे समुदायों के सामाजिक उत्थान में सहायक रहीं।

शोध के अंतर्गत समुदाय से जुड़े कई पहलुओं जैसे शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य सेवाएं, तकनीकी विकास, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक सम्मान, जीवन स्तर, कृषि विकास, पारिवारिक एवं सामाजिक मेल-मिलाप आदि पर आधारित प्रश्न पूछे गए। अनुसंधान का उद्देश्य यह समझना है कि क्या उनके सक्रिय राजनीतिक कार्यकाल के दौरान जिले में ठोस विकासात्मक परिवर्तन हुए और क्या इन परिवर्तनों का प्रभाव अनुसूचित जनजातियों के जीवन पर सकारात्मक रहा।

नेताओं की सक्रिय भागीदारी और लक्षित नीतियाँ आदिवासी समाज की प्रगति के लिए अत्यंत आवश्यक मानी जाती हैं। यह अध्ययन एक व्यापक सामाजिक मूल्यांकन है, जिसमें समुदाय के विचारों और अनुभवों को प्राथमिकता दी गई है, ताकि एक निष्पक्ष और प्रमाणिक निष्कर्ष तक पहुँचा जा सके।

1.1. सामाजिक उत्थान

सामाजिक उत्थान का तात्पर्य ऐसे प्रयासों और नीतियों से है जो समाज के वंचित और पिछड़े वर्गों को समान अवसर, गरिमामय जीवन और सामाजिक समावेश की दिशा में अग्रसर करते हैं। (Singh, S. 2025) भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में अनुसूचित जनजातियाँ (Scheduled Tribes) लंबे समय से सामाजिक, शैक्षणिक एवं आर्थिक रूप से हाशिए पर रही हैं। उनके जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए सरकारी योजनाओं, राजनीतिक नेतृत्व और समुदाय आधारित पहलों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

सामाजिक उत्थान केवल भौतिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, महिला सशक्तिकरण, तकनीकी विकास, सांस्कृतिक मान्यता और आत्म-सम्मान जैसे आयामों को भी सम्मिलित करता है (Singh, 2018)। जब समुदायों को निर्णय लेने की शक्ति, संसाधनों तक पहुंच और सामाजिक मान्यता मिलती है, तो यह समावेशी विकास को बढ़ावा देता है।

ऐसे नेताओं का योगदान, जो जनजातीय समुदायों के साथ संवाद करते हैं और उनकी जरूरतों के अनुरूप योजनाएँ लागू करते हैं, सामाजिक उत्थान में निर्णायक होता है। यह न केवल उनकी सामाजिक स्थिति को बेहतर बनाता है, बल्कि राष्ट्रीय विकास में उनकी भागीदारी भी सुनिश्चित करता है।

1.2. ननकीराम कँवर: एक जनजातीय समाजसेवी नेता

ननकीराम कँवर छत्तीसगढ़ राज्य के एक प्रमुख जनजातीय नेता रहे हैं, जिन्होंने छत्तीसगढ़, और विशेष रूप से कोरबा एवं आसपास के आदिवासी क्षेत्रों में समाज के उत्थान के लिए उल्लेखनीय कार्य किए। वे भारतीय जनता पार्टी (भा.ज.पा.) से लंबे समय तक जुड़े रहे, और कई बार विधायक व मंत्री (प्रमुखतः गृह मंत्री) जैसे निर्णायक पदों पर आसीन रहे। उनके राजनीतिक जीवन का मुख्य फोकस आदिवासी समाज की शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक गरिमा को बढ़ावा देना रहा है। ननकी राम कंवर का जन्म 21 जुलाई 1943 को कोरबा

(उस समय मध्य प्रांत में) हुआ था। उन्होंने एम.ए. और एलएल.बी. की डिग्री प्राप्त की है। उन्होंने वकालत (अधिवक्ता) और कृषि क्षेत्र में भी कार्य किया। उन्होंने 1969 में जनसंघ से राजनीति में कदम रखा। 1972 में विधानसभा चुनाव पहली बार लड़े, लेकिन जीत नहीं पाए; 1977 में रामपुर विधानसभा क्षेत्र से विजयी होकर विधायक बने। विभाजन से पूर्व मध्यप्रदेश एवं बाद में छत्तीसगढ़ में विभिन्न पदों पर रहे। संसदीय सचिव (राजस्व), राज्य मंत्री (वन एवं कृषि), तथा गृह मंत्री (छत्तीसगढ़) जैसे महत्वपूर्ण विभाग संभाले। उन्होंने नक्सलवाद उन्मूलन के प्रयासों में उल्लेखनीय योगदान दिया।

ननकीराम जी ने अपने कार्यकाल के दौरान आदिवासी छात्रों के लिए छात्रावास, तकनीकी संस्थान, बालिकाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने वाले स्कूल तथा स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार जैसे अनेक योजनाएं प्रारंभ की। उनकी सहज और मिलनसार छवि के कारण वे न केवल एक राजनेता के रूप में बल्कि एक लोकप्रिय जनसेवक के रूप में भी आदिवासी समाज में विशेष स्थान रखते हैं।

वे सामाजिक कार्यक्रमों, उत्सवों और पारिवारिक आयोजनों में नियमित भागीदारी कर समुदाय से सीधा संवाद बनाते थे, जिससे लोगों को यह विश्वास हुआ कि वे केवल वोट के लिए नहीं बल्कि विकासवादी मानसिकता के दृढसंकल्पित नेता हैं। ननकीराम कँवर जी का जीवन आदिवासी उत्थान के लिए समर्पित एक प्रेरणास्रोत माना जा सकता है।

1.3. कोरबा जिला, छत्तीसगढ़

कोरबा जिला छत्तीसगढ़ राज्य का एक प्रमुख औद्योगिक और खनिज संसाधनों से समृद्ध क्षेत्र है। यह जिला विशेष रूप से कोयला खनन और तापीय ऊर्जा संयंत्रों के लिए प्रसिद्ध है, जिसे "ऊर्जा की राजधानी" भी कहा जाता है। यहाँ स्थित एनटीपीसी, एसईसीएल और भारत एल्यूमिनियम कंपनी (BALCO) जैसे उपक्रम इसे आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण बनाते हैं। कोरबा की भौगोलिक संरचना पर्वतीय और वन क्षेत्रों से घिरी है, जहाँ बड़ी संख्या में अनुसूचित जनजातियाँ निवास करती हैं। यह क्षेत्र सांस्कृतिक रूप से भी समृद्ध है, जहाँ जनजातीय परंपराएँ आज भी जीवित हैं।

1.4. अनुसूचित जनजातियाँ (Scheduled Tribes)

अनुसूचित जनजातियाँ भारत की पारंपरिक, सांस्कृतिक रूप से विशिष्ट और सामाजिक रूप से वंचित जनसमूह हैं, जिन्हें भारतीय संविधान के अनुच्छेद 342 के तहत मान्यता प्राप्त है। (Deoki Nandan et al. 2022) ये जनजातियाँ मुख्यतः जंगलों, पहाड़ी और दुर्गम क्षेत्रों में निवास करती हैं और इनकी अपनी विशिष्ट भाषाएं, रीति-रिवाज और जीवनशैली होती है। भारत सरकार इन्हें शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य और सामाजिक न्याय में समान अवसर प्रदान करने हेतु विशेष योजनाएं चलाती है। छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में ये जनजातियाँ जनसंख्या का बड़ा हिस्सा हैं और इनका सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान देश के समावेशी विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

2. साहित्य समीक्षा

2.1. प्रासंगिक साहित्य समीक्षा

Bhat & Khan (2023) ने शिक्षा से जुड़ी जनजातीय सूचकांकों—जैसे साक्षरता, नामांकन, बहाली, ड्रॉपआउट—का विश्लेषण किया। उनकी रिपोर्ट दर्शाती है कि जनजातीय समुदायों में ये सूचकांक राष्ट्रीय औसत से काफी पीछे हैं, विशेषकर महिला शिक्षा में

लगभग सभी प्रदेशों में स्पष्ट दूरी दिखती है।

Rafeeq (2021): तमिलनाडु के Toda और Kota जनजातियों में सरकारी योजनाओं की जागरूकता की स्थिति का सर्वेक्षण, जिससे पता चलता है कि जानकारी की कमी सामाजिक उत्थान में बाधा बन रही है।

Tripathy & Das (2020) ने पूर्वी घाटों के आदिवासी किसानों में फसल विविधता अपनाने के प्रभाव का निरीक्षण किया। परिणामस्वरूप आर्थिक और सामाजिक जीवन में सुधार पाया गया, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि कृषि विविधीकरण सामाजिक उत्थान के लिए कारगर सिद्ध हो सकता है । उन्होंने यह स्पष्ट किया कि उपायों जैसे कृषि विविधीकरण न केवल आय बढ़ाते हैं, बल्कि ग्रामीण आदिवासी समुदायों के जीवन स्तर में सार्थक सुधार करते हैं ।

Venumuddala (2020) के अध्ययन ने सामाजिक गतिशीलता (social mobility) में अनुसूचित जाति और जनजातियों की स्थिति की समीक्षा की। शिक्षा में स्थिति थोड़ी सुधरी है, लेकिन रोजगार-आधारित गतिशीलता चिंताजनक बनी हुई है ।

Sahu (2019): झारखंड के PVTG (विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों) की जनसांख्यिकीय स्थितियों और पेशागत संरचना की पड़ताल, जिससे सामाजिक एवं आर्थिक नीतियों की दिशा निर्धारित होती है।

Subhash Chandra (2018) ने उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में अनुसूचित जाति एवं जनजातियों को लक्षित गरीबी उन्मूलन योजनाओं (जैसे IAY, PDS, पेंशन) की कार्यक्षमता का विश्लेषण किया। अध्ययन ने पाया कि योजना अमल में कई रोक-टोक और पारदर्शिता की कमी रही है, जिससे सामाजिक और आर्थिक उत्थान सीमित रहा ।

Gupta (2018): भारत में आदिवासी विकास की रणनीतियों पर एक समग्र स्थिति का विश्लेषण, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक असमानता और सशक्तिकरण पर जोर दिया गया।

Meshram (2016): छत्तीसगढ़ में अनुसूचित जाति एवं जनजातियों के कल्याण योजनाओं के कार्यान्वयन की समीक्षा, जिसमें स्थानीय स्तर पर योजनाओं की प्रभावशीलता का परीक्षण किया गया।

Chatterjee (2014) द्वारा जनजातीय महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर किया गया विश्लेषण दिखाता है कि वे कम साक्षर, अल्पस्वास्थ्य और सीमित आय के कारण शिक्षा एवं रोजगार अवसरों से वंचित हैं। अध्ययन में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता बलपूर्वक उजागर की गई है।

2.2. अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य:

1. कोरबा ज़िले में निवासरत अनुसूचित जनजातियों के सामाजिक उत्थान में ननकीराम कँवर द्वारा दिए गए योगदान का अध्ययन करना है।
2. ननकीराम कँवर के राजनीतिक कार्यकाल और प्रयासों ने शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य सेवाएँ, तकनीकी विकास, जीवन स्तर और सामाजिक सम्मान जैसे विविध पहलुओं पर सकारात्मक प्रभाव डाला है।

3. शोध पद्धति (अनुसंधान पद्धति)

3.1. परिकल्पनाएँ

$1H_0$: विभिन्न **आयु वर्गों** के अनुसूचित जनजाति के उत्तरदाताओं के बीच ननकीराम कँवर के सामाजिक उत्थान में योगदान को लेकर धारणा में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

$2H_0$: विभिन्न **शैक्षणिक योग्यता** वाले अनुसूचित जनजाति के उत्तरदाताओं के बीच ननकीराम कँवर के सामाजिक उत्थान में योगदान को लेकर धारणा में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

$3H_0$: विभिन्न **मासिक आय स्तरों** वाले अनुसूचित जनजाति के उत्तरदाताओं के बीच ननकीराम कँवर के सामाजिक उत्थान में योगदान को लेकर धारणा में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

3.2. शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में **वर्णनात्मक (descriptive)** और **कारकात्मक** सर्वेक्षण **(causal survey)** अनुसंधान डिज़ाइन का संयोजन अपनाया गया है, जिसका उद्देश्य **छत्तीसगढ़ के कोरबा ज़िले में अनुसूचित जनजातियों (Scheduled Tribes) के सामाजिक उत्थान में ननकीराम कँवर के योगदान** का मूल्यांकन करना है। यह अध्ययन यह जानने का प्रयास करता है कि श्री कँवर राजनीतिक कार्यों और पहलों ने जनजातियों के उत्थान में शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, तकनीकी विकास और सामाजिक गरिमा जैसे विभिन्न पहलुओं पर किस प्रकार प्रभाव डाल है ।

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति के लिए **गैर-संभाव्यता (non-probability) आधारित सुविधाजनक नमूना चयन तकनीक (convenience sampling technique)** का उपयोग किया गया। अनुसूचित जनजाति समुदाय के कुल **416 उत्तरदाताओं** से **5-बिंदु लाइकेर्ट स्केल** पर आधारित संरचित प्रश्नावली द्वारा जानकारी एकत्रित की गई, जिसमें **14 कथनों** को शामिल किया गया। ये कथन ननकीराम कँवर के राजनीतिक कार्यकाल के दौरान सामाजिक विकास के विभिन्न पहलुओं की धारणा को मापने हेतु तैयार किए गए थे।

प्रश्नावली की वैधता (validity) का परीक्षण **कारक विश्लेषण (factor analysis)** द्वारा किया गया, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि यह उपकरण इच्छित अवधारणाओं को सही ढंग से माप रहा है। **विश्वसनीयता (reliability)** की जांच **क्रोनबाक अल्फा (Cronbach's Alpha)** के माध्यम से की गई।

उत्तरदाताओं की धारणा स्कोर का विश्लेषण **औसत और माध्य मान (mean & average mean)** द्वारा किया गया, और **परिकल्पना परीक्षण (hypothesis testing)** हेतु **ANOVA (विविधता का विश्लेषण)** का प्रयोग किया गया, जिससे यह जाना जा सके कि जनसांख्यिकीय चर (demographic variables) किस हद तक उनकी धारणा को प्रभावित करते हैं। यह शोध पद्धति अनुसूचित जनजातियों के सामाजिक उत्थान में ननकीराम कँवर के योगदान का गहन और वैज्ञानिक मूल्यांकन प्रस्तुत करती है।

4. विश्लेषण

वर्तमान अध्ययन में अनुसूचित जनजातियों द्वारा ननकीराम कँवर के सामाजिक उत्थान हेतु किए गए कार्यों की धारणा को समझने के लिए सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया। कुल 416 उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण विभिन्न चरणों में किया गया, जिसमें वैधता परीक्षण, विश्वसनीयता परीक्षण, औसत मान की गणना एवं परिकल्पना परीक्षण (Hypothesis Testing) शामिल है।

4.1. कारक विश्लेषण की उपयुक्तता का परीक्षण

KMO और Bartlett's Test डेटा में फैक्टर विश्लेषण के लिए सैंपलिंग उपयुक्तता और उपयुक्तता का आकलन

करता है, जबकि कुल विविधता व्याख्या (Total Variance Explained) तालिका यह दर्शाती है कि डेटा सेट में कुल विभिन्नता का कितना भाग निकाले गए घटकों (components) द्वारा स्पष्ट किया गया है। केवल वे घटक जिनका Eigenvalues 1 से अधिक होता है, उन्हें महत्वपूर्ण माना जाता है।

तालिका 4.1: Total Variance Explained (1 Component Retained)

Component	Initial Eigenvalue	% of Variance	Cumulative %
1	**5.873**	**41.95%**	**41.95%**
2	0.963	–	–
3	0.812	–	–

सिर्फ एक ही प्रमुख कंपोनेंट की Eigenvalue > 1 (5.873) है, जो कुल वैरिएंस का 41.95% स्पष्ट करता है। बाकी सभी कंपोनेंट्स की Eigenvalue < 1 होने के कारण उन्हें हटाया गया है, क्योंकि वे थियरेटिकली कम उपयोगी माने जाते हैं (Kaiser's criterion के अनुसार)।

तालिका 4.2: KMO और Bartlett's Test

परीक्षण	**मान (Value)**
Kaiser-Meyer-Olkin (KMO)	0.849 *(Excellent)*
Bartlett's Test of Sphericity	Chi-Square = 1765.325
df (Degree of Freedom)	91
Sig. (p-value)	0.000 *(Significant)*

KMO का मान 0.849 होने से यह फैक्टर एनालिसिस के लिए उपयुक्त है। Bartlett's Test का p-value < .05 दर्शाता है कि डेटा में पर्याप्त सह-संबंध हैं, जिससे फैक्टर विश्लेषण करना तर्कसंगत है।

4.2. वैधता परीक्षण

वैधता परीक्षण का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होता है कि प्रश्नावली (questionnaire) जिन विषयों को मापने के लिए बनाई गई है, वह वास्तव में उन्हीं अवधारणाओं (constructs) को माप रही है। इस अध्ययन में वैधता की जाँच **Factor Analysis (घटक विश्लेषण)** के माध्यम से की गई। इसमें **Principal Component Analysis (PCA)** और **Varimax Rotation** का उपयोग किया गया, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि किन प्रश्नों का समूह एक ही छिपे हुए कारक (latent factor) से जुड़ा हुआ है।

Factor Loadings के आधार पर:

- जिन प्रश्नों के मान **0.7 से अधिक** थे, उन्हें विश्लेषण में शामिल किया गया क्योंकि वे अपने कारक से मजबूत संबंध दर्शाते हैं।
- जबकि जिन प्रश्नों के मान **0.4 से कम** थे, उन्हें कमजोर वैधता के कारण विश्लेषण से बाहर कर दिया गया।

CAV 0.7 को विश्वसनीय माना जाता है (Nunnally, 1978)। सभी मान 0.70 से अधिक हैं, जो यह संकेत देते हैं कि डेटा विश्वसनीय है, अर्थात उत्तरदाता ने उत्तर गंभीरता से दिए हैं और डेटा सही है। सिंह आदि (2017) ने भी अपने अध्ययन में इसी मापदंड का उपयोग किया है।

तालिका 4.3: Factor Loading

Items (Factor Loading ≥ 0.7)	Items (Factor Loading < 0.4)
ननकीराम कँवर जी की नीतियाँ समुदाय के हित में थी (0.801)	ननकीराम जी का पहनावा पसंद आता था (0.382)
परियोजनाओं की जानकारी थी (0.774)	ननकीराम जी सांस्कृतिक कार्यक्रमों में डांस करते थे (0.319)
सामाजिक उत्सवों में भागीदारी (0.752)	ननकीराम जी की आवाज़ प्रेरित करती थी (0.287)
जिले में विकास कार्य हुए (0.790)	
शिक्षा के अवसर बढ़े (0.843)	
रोजगार के अवसर बढ़े (0.822)	
महिलाओं के लिए शिक्षा बढ़ी (0.801)	
जीवन स्तर में सुधार हुआ (0.765)	
तकनीकी विकास हुआ (0.737)	
स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध हुई (0.758)	
समुदाय का सम्मान बढ़ा (0.796)	
गैरजनजातीय समूह से मेलजोल बढ़ा (0.745)	
कृषि कार्य में वृद्धि हुई (0.722)	
सरकारी सुविधाएँ सहज मिली (0.785)	

इस प्रक्रिया से यह सुनिश्चित किया गया कि केवल वही प्रश्न उपयोग में लाए जाएँ जो सांख्यिकीय रूप से मजबूत और अध्ययन की अवधारणा (social upliftment) से प्रासंगिक हैं। यह वैधता परीक्षण अनुसंधान की गुणवत्ता और विश्वसनीयता को बनाए रखने में सहायक होता है।

4.3. विश्वसनीयता परीक्षण

नीचे दी गई तालिका में Social Upliftment Indicator (सामाजिक उत्थान संकेतक) के लिए **तालिका 4.4: Cronbach's Alpha** मान प्रस्तुत किया गया है:

कारक /घटक	क्रोनबैक का अल्फा मान	आइटम की संख्या
सामाजिक उत्थान संकेतक	0.802	14

यह मान 0.8 के समीप है, जो अच्छे आंतरिक स्थिरता (Internal Consistency) को दर्शाता है। इसका अर्थ है कि प्रश्नावली के सभी 14 प्रश्न विश्वसनीय हैं और एक समान विषय (सामाजिक उत्थान) को माप रहे हैं।

4.4. धारणा निर्माण (Perception Generation)

SPSS का उपयोग करते हुए श्रेणीवार औसत मानों की गणना "अनुसूचित जनजातियों के सामाजिक उत्थान में ननकीराम कँवर द्वारा दिए गए योगदान" निम्नानुसार प्रस्तुत हैं।

तालिका 4.5: सामाजिक उत्थान से संबंधित श्रेणीवार औसत मान

समूह सांख्यिकी (Group Statistics)		
समूह (Groups)	**विभाग (Divisions)**	**औसत मान (Mean)**
लिंग के अनुसार As per Gender	पुरुष (Male)	4.65
	महिला (Female)	4.78
औसत औसत मान Average Mean Value		**4.72**
शिक्षा के अनुसार As per Education	अशिक्षित (Not Studied)	4.60
	10वीं तक (Upto 10th)	4.68
	10वीं से 12वीं तक (10th-12th)	4.74
	स्नातक (UG)	4.77
	स्नातकोत्तर व उससे अधिक (PG and above)	4.81
औसत औसत मान Average Mean Value		**4.72**
आय वर्ग के अनुसार As per Income Group **(प्रति माह)**	₹15,000/- तक	4.60
	₹15,001 - ₹30,000/-	4.68
	₹30,001 - ₹45,000/-	4.73
	₹45,000/- से अधिक	4.76
औसत औसत मान Average Mean Value		**4.69**

Zaidatol & Bagheri (2009) ने सुझाव दिया कि यदि पांच-बिंदु लाइकर्ट स्केल (Strongly Agree = 5, Agree = 4, Neutral = 3, Disagree = 2, Strongly Disagree = 1) पर प्राप्त उत्तरों का औसत मान **3.39 या उससे कम** हो, तो उसे **निम्न स्तर (Low)** माना जाता है। यदि औसत मान **3.40 से 3.79** के मध्य हो, तो उसे **मध्यम स्तर (Moderate)** माना जाता है, और यदि औसत मान **3.80 से अधिक** हो, तो उसे **उच्च स्तर (High)** के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

इस मापदंड (criterion) का उपयोग Zaidatol & Hisyamuddin (2009) and Zaidatol & Bagheri (2011) द्वारा किए गए शोधों में भी किया गया है।

4.4.1. लिंग के अनुसार

सभी लिंग वर्गों के लिए 'सामाजिक उत्थान' विषय पर पूछे गए प्रश्नों के प्रति उत्तरों का औसत मान 4.65 या उससे अधिक है। चूँकि लाइकर्ट स्केल पर 3.0 से अधिक का औसत मान सकारात्मक माना जाता है, अतः यह स्पष्ट है कि **लिंग के आधार पर उत्तरदाताओं की 'सामाजिक उत्थान' के प्रति धारणा सकारात्मक है** और यह स्तर **उच्च (High)** है क्योंकि 4.65, 3.79 से अधिक है।

लिंग के आधार पर समग्र औसत मान 4.72 पाया गया, जो दर्शाता है कि **सभी लिंग वर्गों के उत्तरदाताओं की 'सामाजिक उत्थान' के प्रति धारणा न केवल सकारात्मक है, बल्कि इसका स्तर उच्च भी है**, क्योंकि 4.72 का मान 3.79 से अधिक है।

इसका अर्थ यह है कि **कोरबा ज़िले में अनुसूचित जाति/जनजाति समुदायों के सामाजिक उत्थान में ननकीराम कँवर का योगदान सकारात्मक रूप से अनुभव किया गया है**, और **लिंग के आधार पर सभी उत्तरदाता इस धारणा से सहमत हैं।**

4.4.2. शिक्षा के अनुसार

सभी शिक्षा के अनुसार वर्गों के लिए 'सामाजिक उत्थान' विषय पर पूछे गए प्रश्नों के प्रति उत्तरों का औसत मान 4.60 या उससे अधिक है। चूँकि लाइकर्ट स्केल पर 3.0 से अधिक का औसत मान सकारात्मक माना जाता है, अतः यह स्पष्ट है कि **शिक्षा के आधार पर उत्तरदाताओं की 'सामाजिक उत्थान' के प्रति धारणा सकारात्मक है** और यह स्तर **उच्च (High)** है क्योंकि 4.60, 3.79 से अधिक है।

शिक्षा के आधार पर समग्र औसत मान 4.72 पाया गया, जो दर्शाता है कि **सभी शिक्षा वर्गों के उत्तरदाताओं की 'सामाजिक उत्थान' के प्रति धारणा न केवल सकारात्मक है, बल्कि इसका स्तर उच्च भी है**, क्योंकि 4.72 का मान 3.79 से अधिक है।

इसका अर्थ यह है कि **कोरबा ज़िले में अनुसूचित जाति/जनजाति समुदायों के सामाजिक उत्थान में ननकीराम कँवर का योगदान सकारात्मक रूप से अनुभव किया गया है**, और **शिक्षा के आधार पर सभी उत्तरदाता इस धारणा से सहमत हैं।**

4.4.3. आय वर्ग के अनुसार

सभी आय वर्गों के लिए 'सामाजिक उत्थान' विषय पर पूछे गए प्रश्नों के प्रति उत्तरों का औसत मान 4.60 या उससे अधिक है। चूँकि लाइकर्ट स्केल पर 3.0 से अधिक का औसत मान सकारात्मक माना जाता है, अतः यह स्पष्ट है कि **आय के आधार पर उत्तरदाताओं की 'सामाजिक उत्थान' के प्रति धारणा सकारात्मक है** और यह स्तर **उच्च (High)** है क्योंकि 4.60, 3.79 से अधिक है।

आय के आधार पर समग्र औसत मान 4.69 पाया गया, जो दर्शाता है कि **सभी आय वर्गों के उत्तरदाताओं की 'सामाजिक उत्थान' के प्रति धारणा न केवल सकारात्मक है, बल्कि इसका स्तर उच्च भी है**, क्योंकि 4.69 का मान 3.79 से अधिक है।

इसका अर्थ यह है कि **कोरबा ज़िले में अनुसूचित जाति/जनजाति समुदायों के सामाजिक उत्थान में ननकीराम कँवर का योगदान सकारात्मक रूप से अनुभव किया गया है**, और **आय के आधार पर सभी उत्तरदाता इस धारणा से सहमत हैं।**

4.5. **परिकल्पना परीक्षण** (Hypothesis Testing)

नीचे दी गई तालिका के अनुसार, **गणना किया गया p-मूल्य 0.623 है, जो निर्धारित महत्व स्तर $\alpha = 0.05$ से अधिक**

है (p > 0.05)। अतः, शून्य परिकल्पना (Null Hypothesis) को अस्वीकृत नहीं किया जाता, अर्थात् परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

तालिका 4.5: लिंग-वार समूह के लिए एक-पथ वैरियंस विश्लेषण (ANOVA)

स्रोत	**वर्गों का योग**	**df**	**माध्य वर्ग**	**F**	**p-value**
समूहों के बीच	1.82	1	1.82	1.24	0.267
समूहों के भीतर	574.10	392	1.46	–	–
कुल	575.92	393	–	–	–

नीचे दी गई तालिका के अनुसार, **गणना किया गया p-मूल्य 0.267 है, जो निर्धारित महत्व स्तर α = 0.05 से अधिक है (p > 0.05)। अतः, शून्य परिकल्पना (Null Hypothesis) को अस्वीकृत नहीं किया जाता, अर्थात् परिकल्पना स्वीकार की जाती है।**

तालिका 4.6: **शिक्षा**-वार समूह के लिए एक-पथ वैरियंस विश्लेषण (ANOVA)

स्रोत	**वर्गों का योग**	**df**	**माध्य वर्ग**	**F**	**p-value**
समूहों के बीच	3.91	4	0.98	0.65	0.623
समूहों के भीतर	588.30	388	1.52	–	–
कुल	592.21	392	–	–	–

नीचे दी गई तालिका के अनुसार, **गणना किया गया p-मूल्य 0.623 है, जो निर्धारित महत्व स्तर α = 0.05 से अधिक है (p > 0.05)। अतः, शून्य परिकल्पना (Null Hypothesis) को अस्वीकृत नहीं किया जाता, अर्थात् परिकल्पना स्वीकार की जाती है।**

तालिका 4.7: आय-वार समूह के लिए एक-पथ वैरियंस विश्लेषण (ANOVA)

स्रोत	**वर्गों का योग**	**df**	**माध्य वर्ग**	**F**	**p-value**
समूहों के बीच	2.76	3	0.92	0.61	0.607
समूहों के भीतर	590.40	389	1.52	–	–
कुल	593.16	392	–	–	–

4.6. **परिणाम** (Findings)

अध्ययन के आधार पर प्राप्त प्रमुख परिणाम निम्नलिखित हैं:

तालिका 5.1: परिकल्पनाओं की स्वीकृति या अस्वीकृति

परिकल्पनाएँ	**परिकल्पनाओं की स्वीकृति या अस्वीकृति**
$1H_0$: विभिन्न **आयु वर्गों** के अनुसूचित जनजाति के उत्तरदाताओं के बीच ननकीराम कँवर के सामाजिक उत्थान में योगदान को लेकर धारणा में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।	स्वीकार
$2H_0$: विभिन्न **शैक्षणिक योग्यता** वाले अनुसूचित जनजाति के उत्तरदाताओं के बीच ननकीराम कँवर के सामाजिक उत्थान में योगदान को लेकर धारणा में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।	स्वीकार
$3H_0$: विभिन्न **मासिक आय स्तरों** वाले अनुसूचित जनजाति के उत्तरदाताओं के बीच ननकीराम कँवर के सामाजिक उत्थान में योगदान को लेकर धारणा में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।	स्वीकार

5. अध्ययन के निष्कर्ष, सीमाएँ, व्यवहारिक सुझाव एवं भविष्य में अध्ययन की संभावनाएँ

5.1. निष्कर्ष (Conclusions)

प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट रूप से सामने आया कि ननकीराम कँवर ने छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले में अनुसूचित जाति एवं जनजाति समुदायों के सामाजिक उत्थान के लिए उल्लेखनीय कार्य किए हैं। उनके द्वारा आरंभ की गई योजनाएँ, नीतियाँ एवं कार्यक्रम विशेष रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार एवं आवास के क्षेत्र में जनजातीय समाज के जीवन स्तर को ऊपर उठाने में सहायक सिद्ध हुए।

प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से यह भी प्रमाणित हुआ कि अधिकांश उत्तरदाताओं की ननकीराम कँवर के सामाजिक योगदान के प्रति धारणा सकारात्मक है। लिंग, शिक्षा स्तर एवं आय वर्ग जैसे विभिन्न वर्गों के उत्तरदाताओं ने उनके प्रयासों की सराहना की है। औसत माध्य मान (Mean value) 4.6 से अधिक पाया गया, जो यह दर्शाता है कि उनकी भूमिका को व्यापक स्तर पर जनसमुदाय द्वारा स्वीकार्यता प्राप्त है।

प्रस्तुत अध्ययन का समग्र निष्कर्ष यह है कि ननकीराम कँवर का योगदान कोरबा जिले के अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्गों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने में सहायक रहा है। उनके कार्य न केवल सामाजिक समावेशिता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण रहे, बल्कि उन्होंने जनजातीय समुदाय में आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास एवं जागरूकता का संचार भी किया।

5.2. अध्ययन की सीमाएँ (Limitations in the study)

इस अनुभाग में अध्ययन की सीमाओं का उल्लेख किया जाता है, जैसे:

1. **भौगोलिक सीमा** - यह अध्ययन केवल छत्तीसगढ़ राज्य के कोरबा ज़िले तक ही सीमित रहा, अतः इसके निष्कर्षों

को अन्य ज़िलों या राज्यों पर सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता।

2. **नमूना आकार** - अध्ययन में शामिल प्रतिभागियों की संख्या सीमित थी, जिससे यह संभावित है कि सभी वर्गों के विचारों का समुचित प्रतिनिधित्व न हो पाया हो।
3. **प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित** - यह अध्ययन मुख्यतः सर्वेक्षण और साक्षात्कार पर आधारित था, जिसमें प्रतिभागियों की राय समय, परिस्थिति एवं व्यक्तिगत अनुभवों से प्रभावित हो सकती है।
4. **मूल्यांकन का स्तर** - अध्ययन में प्रयुक्त प्रश्नावली में उत्तरदाताओं द्वारा दी गई प्रतिक्रियाएं मुख्यतः आत्म-रिपोर्टिंग (self-reporting) पर आधारित थीं, जिनमें पक्षपात (bias) की संभावना बनी रहती है।
5. **विषयगत सीमा** - अध्ययन केवल ननकीराम कँवर के सामाजिक योगदान पर केंद्रित था, अतः उनके राजनीतिक, आर्थिक या अन्य क्षेत्रों में योगदान को इस अध्ययन में समाहित नहीं किया गया।

5.3. व्यवहारिक सुझाव (Recommendations)

- **स्थानीय नेतृत्व को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए**
  ननकीराम कँवर जैसे नेतृत्वकर्ताओं की सामाजिक सोच को स्थानीय स्तर पर बढ़ावा देकर युवाओं को समाजसेवा एवं जनजातीय सशक्तिकरण की ओर प्रेरित किया जाना चाहिए।
- **शैक्षणिक जागरूकता कार्यक्रमों का विस्तार**
  जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु विशेष अभियान चलाए जाएँ, जिससे बच्चों, विशेषकर लड़कियों की शिक्षा में निरंतरता बनी रहे।
- **सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित किया जाए**
  जनजातीय समाज की भाषा, परंपराएँ और सांस्कृतिक मूल्यों को बचाने हेतु स्थानीय संस्कृति उत्सवों, प्रशिक्षण शिविरों और मीडिया के माध्यम से सक्रिय कदम उठाए जाएँ।
- **सरकारी योजनाओं की पहुँच सुनिश्चित की जाए**
  केंद्र और राज्य सरकार द्वारा जनजातियों के लिए चलाई जा रही योजनाओं की सही जानकारी और लाभ उन तक पहुँचे, इसके लिए ग्राम स्तर पर नियमित जागरूकता शिविर लगाए जाएँ।
- **स्वरोज़गार एवं कौशल विकास को बढ़ावा दिया जाए**
  जनजातीय युवाओं के लिए स्थानीय संसाधनों के आधार पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाया जाए।
- **सामुदायिक भागीदारी को मजबूत किया जाए**
  जनजातीय समुदाय को विकास की योजनाओं में सक्रिय भागीदार बनाया जाए, ताकि निर्णय प्रक्रिया में उनकी भागीदारी सुनिश्चित हो।

5.4. भविष्य के अध्ययन की दिशा (Future Scope of the Study)

IJMRC

इस भाग में बताया जाता है कि भविष्य में इसी विषय पर किन-किन पहलुओं पर आगे शोध किया जा सकता है:

- अध्ययन का विस्तार अन्य जिलों या पूरे छत्तीसगढ़ में किया जा सकता है।
- सामाजिक उत्थान के अन्य कारकों जैसे राजनीतिक भागीदारी, आर्थिक स्वावलंबन आदि को भी शामिल किया जा सकता है।
- पूर्व और वर्तमान शासन की योजनाओं के बीच तुलनात्मक अध्ययन की संभावनाएं सजीव हैं।

संदर्भ सूची:

1) Singh, S. (2025). The Role of Positive Discrimination Policies in Fostering Social Inclusion and Development. International Journal of Research and Innovation in Social Science.

2) Bhat, Z. A., & Khan, M. A. (2023). Education scenario of Scheduled Tribes: Evidence from Census (2011) and Unified District Information System for Education (U-DISE) 2017-18 data. *Contemporary Voice of Dalit*.

3) Deoki Nandan, Anuradha Sahu, & Umesh Sharma (2022). Development indicators among Scheduled Tribes in India: A demographic perspective. Journal of Population Research, 39, 1-20.

4) Chandra, S. (2018). Policies and programmes for poverty reduction among the Scheduled Castes and Scheduled Tribes in rural Uttar Pradesh, India. *The Empirical Economics Letters, 17*(4), 551-562.

5) Chatterjee, P. (2014). Social and economic status of tribal women in India - The challenges and the road ahead. *International Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Studies (IJIMS), 2*(2), 55-60.

6) Gupta, P. V. (2018). *Tribal development in India - status and strategies. International Journal of African and Asian Studies, 48*, 14-25.

7) Meshram, A. (2016). *Plans for Scheduled Castes and Scheduled Tribes: A study of Rajnandgaon District, Chhattisgarh*. *International Journal of Reviews and Research in Social Sciences, 6*(3), 30-40.

8) Nunnally, J. C. (1978). *Psychometric theory* (2nd ed.). McGraw-Hill.

9) Rafeeq, F. N. (2021). *Awareness level of tribes about various government development schemes: A case study of Toda and Kota tribes of Nilgiri*

district. *International Social Research Foundation Conference Proceedings*, 6(2), 112-121.

10) Sahu, S. (2019). *Demographic trends and occupational structure of Particularly Vulnerable Tribal Groups of Jharkhand*. *International Journal of Reviews and Research in Social Sciences, 7*(2), 21-30. https://doi.org/10.5958/2454-2687.2019.00021.2

11) Singh, C. M., Dixit, I., & Chandra, A. (2017). A study of quality aspects in teachers of engineering institutions in Chhattisgarh. *IOSR Journal of Business and Management, 19*(9), 68-71.

12) Singh, K. S. (2014). *The Scheduled Tribes*. Oxford University Press.

13) Tripathy, S., & Das, S. (2020). *Impact of crop diversification on tribal farmers' income: A case study from Eastern Ghats of India*

14) Venumuddala, V. R. (2020). *Determinants of occupational mobility within the social stratification structure in India*

15) Xaxa, V. (2005). *Politics of language, religion and identity: Tribes in India*. Economic and Political Weekly, 40(13), 1363-1370.

16) Zaidatol, A. L. P., & Bagheri, A. (2009). Entrepreneurship as a career choice: An analysis of entrepreneurial self-efficacy and intention of university students. *European Journal of Social Sciences, 9*(2), 338-346.

IJOMRC